4. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(सुनने में लगभग समान, लेकिन अलग अर्थ वाले शब्द)

मैडम – राहुल, ये किताबें मेज़ पर कब तक बिना खुले पड़ी रहेंगी? (रखी हुई के अर्थ में)

राहुल – मैडम, अभी मैंने इनमें से दो पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं इन्हें पढ़कर रख दूँगा। (पढ़ने की क्रिया के अर्थ में)



ऊपर दिए गए वाक्यों में 'पड़ी' और 'पढ़ी' सुनने में लगभग समान लगते हैं। लेकिन इन दोनों में पर्याप्त अंतर है–

अब आप समझ गए होंगे कि ये सुनने में लगभग समान, लेकिन अलग अर्थ देने वाले शब्द हैं।

'श्रुति + सम = श्रुतिसम' का अर्थ है 'सुनने में एक समान' और 'भिन्न + अर्थक = भिन्नार्थक का अर्थ 'अर्थ में भिन्नता' यानी अर्थ अलग होना। इस प्रकार–

> **वे शब्द जो पढ़ने और सुनने में लगभग एक समान प्रतीत होते हैं, परंतु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, उन्हें 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।**

कुछ प्रमुख श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, उनके अर्थ एवं वाक्य प्रयोग–

1. अवधि [स्त्री०] (समय) – इस सड़क का काम निर्धारित* अवधि में पूरा हो गया। (*निर्धारित - प
   से तय)

   अवधी [स्त्री०] (हिंदी की एक उपभाषा) – तुलसीदास जी ने रामचरितमानस अवधी में रचा
2. अनिल [पु०] (हवा) – मलयानिल (मलय पर्वत से बहकर आने वाली हवा) बह रहा था।

   अनल [पु०] (आग) – दावानल* ने जंगल में भयंकर तबाही मचाई। (*दाव + अनल = दावा
   यानी जंगल में लगने वाली आग; दाव - जंगल, वन)
3. अवलंब [पु०] (सहारा) – हमें एक-दूसरे का अवलंब (सहारा) बनना चाहिए।

   अविलंब [क्रि०विशे०] (शीघ्र/बिना देर किए) – उन्होंने मेरे पत्र का अविलंब (शीघ्र) जवाब
   दिया।
4. अचार [पु०] (एक चटपटा खाद्य पदार्थ) – बहुत अधिक अचार खाना सेहत के लिए नुकसानदाय
   होता है।

   आचार [पु०] (आचरण) – हमारे आचार-विचार में पवित्रता होनी चाहिए।
5. अंक [पु०] (संख्या/गोद) – 100 में से 98 फ़ीसदी अंक प्राप्त करना आसान काम नहीं है।

   अंग [पु०] (हिस्सा/भाग) – वाक्य के दो अंग होते हैं– उद्देश्य, विधेय।

6. ओर [दिशासूचक शब्द] (तरफ़) – तुम उस ओर मत जाओ।
और [योजक शब्द] (तथा) – बैग से पुस्तक निकालो और पढ़ने बैठ जाओ।

7. की [स्त्री०] (संबंध कारक की विभक्ति, करना क्रिया का भूतकाल) स्त्रीलिंग वाला रूप – नव्या की छोटी बहन भव्या ने श्रुतलेख लिखा। इसमें उसने कोई भी गलती नहीं की।
कि (समुच्चयबोधक, दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य) – नव्या ने बताया कि भव्या बचपन से ही इतना सुंदर लिखती रही है।

8. कोश [पु०] (भंडार) – इस शब्द का अर्थ शब्दकोश में अवश्य मिल जाएगा।
कोष [पु०] (खजाना) – (कोष + आगार = कोषागार) प्रधानमंत्री राहत कोष से आपदा पीड़ितों की मदद की जाती है।

9. गाड़ी [स्त्री०] (कार, जीप आदि) – उन्होंने नई गाड़ी खरीदी है।
गाढ़ी [वि०, स्त्री०] (गहरी) – रमन और अमन के बीच बहुत गाढ़ी दोस्ती है।

10. गिरि [पु०] (पहाड़) – दुर्गम गिरि पर चढ़ना आसान काम नहीं होता है। (दुर्गम- जहाँ पहुँचना कठिन हो)
गिरी [स्त्री०] (गिरना का भूतकाल) – वह ठोकर खाकर बहुत तेज़ गिरी।

कुछ अन्य श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द–

1. उपयुक्त	[पु०]	(सही)	9. नियत	[वि०, पु०]	(तय)
उपर्युक्त	[वि०, पु०]	(ऊपर कहा गया)	नीयत	[स्त्री०]	(इरादा, इच्छा)
2. कर्म	[पु०]	(काम)	10. नीर	[पु०]	(पानी)
क्रम	[पु०]	(सिलसिला)	नीड़	[पु०]	(घोंसला)
3. कृति	[स्त्री०]	(रचना)	11. पथ	[पु०]	(रास्ता)
कृती	[वि०, पु०]	(निपुण)	पथ्य	[पु०]	(रोगी का आहार)
4. गुर	[पु०]	(उपाय)	12. पर्ण	[पु०]	(पत्ता)
गुरु	[पु०]	(शिक्षक)	प्रण	[पु०]	(प्रतिज्ञा)
5. गृह	[पु०]	(घर)	13. परिणाम	[पु०]	(नतीजा)
ग्रह	[पु०]	(अंतरिक्ष के ग्रह)	परिमाण	[पु०]	(मात्रा)
6. ज़रा	[क्रि०वि०, पु०]	(थोड़ा)	14. परुष	[वि०, पु०]	(कठोर)
जरा	[पु०]	(बुढ़ापा)	पुरुष	[पु०]	(व्यक्ति)
7. दिवा	[पु०]	(दिन)	15. शौक	[पु०]	(चाव)
दीवा	[पु०]	(दीपक)	शोक	[पु०]	(दुख)
8. दीप	[पु०]	(दीपक)	16. मात्र	[निपात]	(केवल)
द्वीप	[पु०]	(टापू)	मातृ	[स्त्री०]	(माता)

17.	बूरा	[पु०]	(सफ़ेद रंग का मीठा चूर्ण)	19. समान	[पु०] (बराबर)
	बुरा	[वि०, पु०]	(खराब)	सामान	[पु०] (चीज़ें आदि)
18.	सन	[पु०]	(वह पौधा, जिसकी छाल से रस्सी बनती है)	20. में	[विभक्ति] (अधिकरण कारक की विभक्ति)
	सन्	[पु०]	(वर्ष)	मैं	[सर्व०] (अपने लिए शब्द)

पाठ एक नज़र में

- पढ़ने और सुनने में लगभग एक समान, किंतु अर्थ में अलग शब्दों को 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' कहते हैं।
- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द सही जगह और सही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग करना सिखाते हैं।



अभ्यास कार्य

सोचिए और बताइए

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द किन्हें कहते हैं?
2. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के कुछ वाक्य बनाइए और अंतर बताइए।

लिखिए

1. **नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके लिए सही शब्द छाँटिए–**

(क)



(गिरि/गिरी)

(ख)



(द्वीप/दीप)

(ग)



(अचार/आचार)

(घ)



(पर्ण/प्रण)

